38. कुंजर मुख से कन गिरा, खुटै न वाको आहार।
कीड़ी कन लेकर चली, पोषन दे परिवार॥ ५॥

Kunjar Mukh Se Kan Giraa, Khutai Na Vaako Aahaar.
Keeree Kan Lekar Chalee, Poshan De Parivaar..5..

A grain fell from the mouth of an elephant while it was eating, but this does not in any way affect the diet of the elephant. But an ant took away that grain and fed its family with it, i.e. this kind of kindness will take care of other smaller beings, but this won't cause any kind of scarcity to you.

39. जहां काम तहां नाम नहिं, जहां नाम नहिं काम।
दोनों कबहू ना मिलै, रवि रजनी इक ठाम॥

शब्दार्थ—जहां काम (Sex) होता है वहां नाम (प्रभु का) नहीं होता। जहां (प्रभु का) नाम होता है, वहां काम नहीं रहता। क्योंकि काम और (प्रभु का) नाम दोनों एक स्थान पर उसी प्रकार नहीं साथ रह सकते जैसे सूर्य और रात एक ही स्थान पर एक साथ नहीं हो सकते।

40. चिंता चित्त बिसारिये, फिर बूझिए नहीं आन।
इन्द्री पसारा मेटिये, सहज मिलैं भगवान्॥

शब्दार्थ—यदि भगवान को पाना चाहते हो तो सांसारिक चिंताओं को मन से निकाल दो और एक बार निकाल देने के बाद पुनः उस ओर झांकों भी मत (यानि केवल निकालो नहीं, भुला भी दो)। इन्द्रियों के विस्तार को (मोह, वासना तथा इच्छाओं को) मिटा दो। ऐसा करने से सहज ही भगवत्तत्व की प्राप्ति हो जाएगी।

41. सतगुरु ऐसा कीजिए, लोभ मोह भ्रम नाहिं।
दरिया सो न्यारा रहे, दीसे दरिया मांहि॥

शब्दार्थ—ऐसा सच्चा गुरु धारण करना चाहिए, जो लोभ और मोह से रहित हो और जिसे (अपने मत, ज्ञान या सिद्धांत के प्रति विश्वास हो। इस विषय में वह स्वंय संशय/दुविधा में न हो) कोई भ्रम न हो। वह लौकिक दृष्टि से तो दरिया (संसार) में दिखाई दे, किन्तु वास्तव में दरिया से पृथक हो (यानि कर्तव्य करते हुए भी मोह माया में लिप्त न हो।—कबीर